

पांसु° सु०. 2, 158, 6. शेष° RĪĠA-TAR. 3, 355. अक्षिन्द्° Būg. P. 3, 32, 4. तदङ्क° RAGH. 3, 7. अरिष्ट° das Lager einer Wöchnerin 3, 15. सिद्धात-शय्यामधिशय्य SĪH. D. 31, 10. am Ende eines adj. comp. (f. घ्रा): अङ्क° KUMĀRAS. 7, 65. भूमि° R. 3, 32, 41. 5, 57, 11. मनःशिलागुह° (वानर) 4, 37, 6. अ° KATHĀS. 17, 87. — 2) das Liegen, Ruhen, Schlafen VOP. 26, 186. KĀTJ. ÇR. 4, 15, 31. M. 7, 220. BHAG. 11, 42. न शय्यासनभोगेषु रतिं विन्दति MBH. 3, 2107. सु०. 1, 69, 21. 2, 187, 5. पृथक्कृत्या नारीणाम् Spr. (II) 878. पां तो वने दुःखशय्यामवात्सीत् — आस्रेतु तं दुःखतरामन-धामत्तयां शय्यां धार्तराष्ट्रः परासुः MBH. 3, 1819. — 3) = गुम्फन MED. j. 37. = शब्दगुम्फ H. an. = ग्रन्थस्य निर्मितिः HĪR. 146. Bez. eines Çab-dālamkāra (neben गुम्फना) Verz. d. Oxf. H. 208, a, No. 489. — Vgl. अधःशय्य, अधःशय्या, गर्भ° (auch KATHĀS. 34, 63), जल°, पर्ण°, पुष्प°, भू°, भूमि°, मृदा°, राज°, विलास°, वीर°, शर°, समानशय्य und शायिक.

शय्यागृह n. Schlafgemach MBH. 13, 2745. R. 4, 12, 11. R. 2, 22. RAGH. 16, 4. KATHĀS. 110, 134. — Vgl. व्रत°.

शय्यापालक m. Hüter des (fürstlichen) Ruhebettes PAÑĀT. 136, 20. fg. शय्यापालक n. das Amt des Hüters des (fürstlichen) Ruhebettes PAÑ-ĀT. 63, 22.

शय्यामूत्र n. Bettpissen ÇĀRṆG. SĀM. 4, 7, 108.

शय्यावासवेष्मन् n. Schlafgemach KATHĀS. 45, 180.

शय्याविष्मन् n. dass. KATHĀS. 20, 146. RĪĠA-TAR. 4, 433. 5, 409.

शय्योत्थायम् (शय्या + उ° absol. von स्था mit उद्) adv. früh Mor- gens, sobald man sich vom Lager erhoben hat, KATHĀS. 113, 30. BHĀṬ. 4, 8.

1. शर, प्रणीति NAIH. 2, 19 (वधकर्मन्). DULUP. 31, 18 (हिंसायाम्). प्रणानैः अशरीत्, अशरीत्: शशरिथ P. 6, 4, 126. Schol. शशरुम् und शश्रुम् 7, 4, 12. VOP. 16, 5. शश्रै, शरिष्यते, °शीर्य, शरीतोम् RV. 3, 53, 17. zer- brechen: रुद्रो वा घ्रीवा अशरीत् AV. 6, 32, 2. पृष्टी: RV. 10, 87, 10. वीरु 89, 6. शत्रून् 138, 4. ÇAT. Br. 11, 1, 35. TBR. 1, 5, 4, 4. med. sich brechen (z. B. den Arm): शश्रे पादमङ्गुरिम् AV. 4, 18, 6. स्वयं बलानि तन्वः प्र- णानाः RV. 10, 28, 11. act. so v. a. erlegen: प्रणानि यस्तान् (मृगान्) प्रस- र्भेन तस्य ते KIR. 14, 13. pass. शीर्यते (auch शीर्यति u. s. w. aus metri- schen Rücksichten), शारि; brechen, reißen, bersten, auseinandergehen; sich lostrennen: अन्नो न शीर्यते RV. 1, 164, 13. मा मात्रा शार्यपसः पू- र्णतोः 2, 28, 5. TS. 5, 2, 6, 2. 6, 1, 3, 5. हिमवान् शीर्येत् MBH. 3, 591. पृथि- वी शीर्येत् R. GORR. 2, 15, 29. अशीर्यत शिलाः 5, 54, 7. सानवः KATHĀS. 107, 90. पत्नारदग्धं न शीर्यते सु०. 1, 34, 2. 99, 1. धनुर्वाशीर्यदस्यतः MBH. 6, 5058. नाशीर्यत धनुश्चास्य 5059. शीर्यते रथचक्रवत् KĀM. NITIS. 8, 2. विव्याध पाण्डवं हस्ते तस्य मुष्टिरशीर्यत MBH. 4, 1943. शीर्यमाणः संल- ह्यते न च्छिद्रोऽपि हारः RAGH. 16, 62. कञ्चुके शीर्यमाणे निजे ऽस्मिन्- स्तस्मिंश्च देहे MĀRK. P. 25, 14. शीर्यत्तणालघु Spr. (II) 3178. तत्रणां पुष्पि- ताम्राणां सर्वपुष्पमशीर्यत fel ab R. 5, 5, 16. आमः स्यात्पृष्ठसंकाशो न तु शीर्येत कर्कचित् Spr. 3263. केशाः शीर्यत वेधसः ausfallen MĀRK. P. 48, 21. in sich zusammenfallen, verwelken Spr. (II) 1845, v. 1. अघ्रिवासा न शीर्यते sich abnutzen, vergehen RĪĠA-TAR. 3, 426. घीः शीर्यते सदा sich aufreiben HARIV. 16121. ÇAT. Br. 14, 6, 28. शीर्ये P. 8, 2, 42. zerbrochen, zersprungen (= विशीर्य und तनु MED. n. 30): यथा शीर्येन शीर्यं संधि- त्सेत् ÇAT. Br. 11, 5, 6. (वज्रम्) दशधा शतधा चैव तच्छीर्यं वज्रमूर्धनि MBH. 1, 6485. 13, 665. शीर्यापरपुध KATHĀS. 47, 72. रथ R. 3, 45, 12.

°शीर्यन् Būg. P. 3, 18, 5. °दत्त (गज) MBH. 7, 4564. Spr. (II) 480. (I) 2347. zerrissen: कन्था (II) 2426, v. 1. (für जीणा). abgesprungen, abgefallen: नगाद्यादिव शीर्यानां मृङ्गाणां पततां नितौ MBH. 3, 2540. कनकबिन्दवः R. GORR. 2, 96, 16. 3, 67, 7. शिरःशीर्येस्तत्कचैः ausgefallen RĪĠA-TAR. 2, 88. आपः ausgebrochen (aus dem Flussbett) Nir. 4, 25. zerfallen, ver- fault, verwest R. GORR. 2, 33, 21. तरु Spr. 3012. सन्नन् KATHĀS. 3, 56. MĀLATIM. 79, 18. MĀRK. P. 34, 25. शीर्या गङ्गाजले ऽत्यजः KATHĀS. 27, 128. कुष्ठशीर्यकराङ्गिक 64, 131. in Verbindung mit Wörtern, die Frucht, Blüthe, Blatt u. s. w. bedeuten, sowohl abgefallen, als ver- welkt, verfault: पुष्पमूलफलैः स्वयं शीर्यैः von selbst abgefallen M. 6, 21. °पर्णाशिन MBH. 13, 760. 15, 974. R. 1, 51, 26 (52, 25 GORR.). R. GORR. 1, 44, 11. कर्णिकारस्य शाखेव शीर्यपुष्पा R. 2, 92, 22 (101, 24 GORR. शीर्यपर्णा). शीर्यपर्णफलैर्दुमैः MBH. 1, 5891. 5, 7349. R. 1, 23. MBH. 30. VARĀH. BRH. S. 51, 3. 89, 1. SĪH. D. 42, 11. शीर्यानि फलानि कोशे ver- fault KATHĀS. 75, 32. RĪĠA-TAR. 3, 326. Būg. P. 4, 8, 73.

— व्यति pass. in viele Stücke zerbrechen, — zerspringen: पुङ्गानो व्यतिशीर्यताम् MBH. 4, 1517.

— अनु vgl. अनुशर (?).

— अपि abbrechen, act.: पृष्टी: AV. 2, 7, 5. 6, 32, 2. 19, 45, 1. med.: वा- ङ्कम् ÇAT. Br. 1, 7, 3, 19. pass.: यदि यावापिशीर्यते zerbricht PAÑĀV. Br. 9, 9, 13. °शीर्या AV. 4, 3, 6.

— अत्र zerbrechen: मन्यून् PAÑĀV. Br. 7, 5, 2. pass. auseinanderstie- ben: (पावकः) समत्तादवशीर्यते R. ed. Bomb. 1, 37, 13. °शीर्या KAUC. 88. auseinanderfallend, wackelig: न भये नावशीर्ये च शयने प्रस्वपति च MBH. 13, 5003.

— आ vgl. आशरीक.

— नि abbrechen: निशीर्य शय्यानां मुखो VS. 16, 13. — Vgl. निशरणा, °शारणा, °शारूक.

— निम् zerbrechen: घ्रीवाः KĀTJ. 24, 10. शत्रून् AV. 3, 6, 2. 8, 8, 3.

— परा zerbrechen, zermalmen; act. RV. 7, 104, 1. 10, 87, 14. fg. °श- रैत् AV. 6, 66, 2. °शरीत् 75, 1. °शीर्या Nir. 6, 30. — Vgl. पराशर.

— परि pass. zerspringen, bersten: (महागिरिः) समत्तात्पर्यशीर्यत MBH. 3, 1141. नभसः परिशीर्यतः 1, 8283.

— प्र zerbrechen, abbrechen: पर्वाणि RV. 10, 87, 5. पूर्वार्धम् ÇAT. Br. 1, 8, 4, 13. 39. KĀTJ. ÇR. 3, 4, 7. °शीर्या partic.: अयं ÇAT. Br. 11, 1, 8, 6. स्वयं° 5, 3, 2, 5. अ° KĀTJ. ÇR. 2, 3, 31. प्रशीर्ये धनुषि MBH. 7, 4425. °मु- ष्टि 8, 4697.

— प्रति abbrechen, (die Spitze) abstossen: प्रत्ययं प्रणीहि RV. 3, 30, 17. 10, 87, 10. TBR. 1, 5, 4, 4. प्रस्तुर्म् TS. 2, 6, 5, 3. — Vgl. प्रतिशर.

— वि pass. zerbrechen, zerspringen, zerfallen: मा युगं वि शारि RV. 3, 53, 17. PAÑĀV. Br. 14, 9, 27. रथाङ्गम् ÇĀRṆG. GRH. 1, 15, 2, 13. भाण्डं पृथिव्यां तद्वशीर्यत R. 2, 78, 17. घनाः MBH. 2, 2695. नेमिः Verz. d. Oxf. H. 11, 6, 13 v. u. (व्यशीर्यत zu lesen). (शक्तिः) व्यशीर्यत मेदिनीम् zer- splitterte und drang in den Erdboden MBH. 6, 4763. उत्का 2, 2648. गिरिः 1, 8283. R. 1, 65, 12. शिखरः सक्षुध 5, 56, 43. 5, 13. 2, 71, 17. भ- वनानि 5, 50, 10. प्रासादः 38, 35. फलानि Būg. P. 5, 16, 18. तिलशो वि- शीर्यमाणं शरीरम् 26, 28. R. GORR. 1, 26, 12. Spr. (II) 3172. विशीर्यन्ती नावमिव MBH. 3, 15713. गदा विशीर्यन्ती 6, 5424. तस्यैव पाणिः सनखो